हिंदी की पाठ्यपुस्तकें 'सारंगी' और 'वीणा' का विश्लेषण एक शैक्षिक दृष्टिकोण से

सिरिसिल्ला चंदना*

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक कौशलों का समग्र विकास करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–बुनियादी स्तर (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022 ने प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा (ई.सी.ई.) को बच्चों के समग्र विकास की आधारशिला के रूप में मान्यता दी है। इसी संदर्भ में हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तकें 'सारंगी' और 'वीणा' तैयार की गई हैं। ये पाठ्यपुस्तकें चार-स्तंभीय भाषा शिक्षण दृष्टिकोण— मौखिक भाषा, शब्द पहचान, पठन और लेखन पर आधारित हैं और खेल-आधारित शिक्षण, रचनात्मकता तथा पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देती हैं। इनका उद्देश्य बच्चों की भाषायी दक्षताओं के साथ-साथ उनमें नैतिक मूल्यों और सामाजिक कौशलों को विकसित करना है। यह अध्ययन 'सारंगी' और 'वीणा' को प्रारंभिक शिक्षा के लिए एक प्रभावी और समग्र संसाधन के रूप में प्रस्तुत करता है, जो बच्चों को भाषायी दक्षताओं के विकास के साथ-साथ आत्मनिर्भर और संवेदनशील नागरिक बनाने में सहायक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में यह जोर दिया गया है कि बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा को मजबूत बनाने के लिए खेल, गतिविधियाँ और अनौपचारिक शिक्षण तरीकों का उपयोग करना चाहिए, ताकि वे शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकें। वहीं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022 में, पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धतियों को इस प्रकार तैयार किया गया है कि वे बच्चों की मानसिक और शारीरिक आवश्यकताओं को प्राथमिकता के साथ संबोधित कर सकें।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 में भाषा और संख्यात्मक कौशल को प्राथमिक स्तर पर मजबूत करने के लिए विशेष दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिसका उद्देश्य बच्चों के सामाजिक और भावात्मक कौशल को भी सुदृढ़ करना है। इसके अतिरिक्त प्रारंभिक शिक्षा को बच्चों में नैतिकता और सामाजिक मूल्यों के विकास के लिए एक आदर्श समय माना गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इसे बच्चों के समग्र विकास के एक अनिवार्य भाग के रूप में प्रस्तुत किया है।

**हिंदी शिक्षिका*, जिला परिषद उच्च विद्यालय, मुलुगु, सिद्दिपेट, तेलंगाना 502 279

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा (ई.सी.ई.) का बच्चों के समग्र विकास में अत्यधिक महत्व है। यह न केवल बच्चों को औपचारिक शिक्षा के लिए तैयार करता है, बल्कि अच्छे आदर्शों और नैतिक मूल्यों को स्थापित करने में भी मदद करता है। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के कार्यक्रमों को तनावमुक्त और आकर्षक सीखने के वातावरण में लागू किया जाना चाहिए, जिसमें खेल और गतिविधि-आधारित सीखने पर जोर दिया जाता है, ताकि बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बच्चों में अच्छे गुणों का विकास करना है, जिससे वे सामाजिक रूप से उत्पादक नागरिक बन सकें। इसके अलावा प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा अभिभावक और समुदाय की भागीदारी को प्रोत्साहित करती है, जिससे एक ऐसा वातावरण तैयार किया जा सके जो जीवनभर सीखने के लिए अनुकूल हो।

प्राप्त शोधों से यह भी स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा बच्चों की शिक्षा में सफलता की संभावनाओं को बढ़ाती है और विफलता की संभावना को कम करती है। यह बच्चों को आत्मसम्मान और सुरक्षा की भावना प्रदान करती है, जिससे वे अपनी भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने में सक्षम हो सकते हैं।

इस प्रकार प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा न केवल बच्चों के विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि यह उन्हें भविष्य में सक्षम और समर्पित नागरिक बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा का सही कार्यान्वयन न केवल व्यक्तिगत विकास में सहायक है, बल्कि यह समाज के समग्र विकास में भी योगदान देता है।

जेनेट गोंजालेज-मेना की पुस्तक फाउंडेशन ऑफ अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन : टीचिंग चिल्ड्रेन इन ए डाइवर्स सोसाइटी में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के बुनियादी सिद्धांतों पर चर्चा की गई है। ये सिद्धान्त बच्चों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक विकास की आधारशिला रखते हैं। प्रारंभिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को संपूर्ण विकास के लिए मजबूत और सुरक्षित आधार देना है। इसमें संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों, बच्चों की सोचने-समझने और समस्याओं के हल करने की क्षमता को निखारने पर जोर दिया गया है। इसमें सामाजिक और भावात्मक विकास के महत्व पर भी बल दिया गया है, जिसमें बच्चों को आत्मस्वीकृति, आत्मविश्वास और संबंध निर्माण कौशल सिखाने पर विशेष ध्यान दिया गया है। इसके अलावा इस पुस्तक में हर बच्चे की अलग-अलग सीखने की गति और रुचियों का सम्मान करते हुए व्यक्तिगत विकास पर ध्यान देने की बात की गई है। खेल आधारित शिक्षण को भी एक महत्वपूर्ण तत्व माना गया है, जिससे बच्चे रचनात्मकता और अन्वेषण की भावना के साथ आनंदमयी ढंग से सीखते हैं। इन सिद्धांतों के अनुसार प्रारंभिक शिक्षा बच्चों की मानसिक और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुकूल होनी चाहिए, ताकि वे अकादमिक, व्यक्तिगत और भावनात्मक स्तर पर मजबूत बन सकें।

भाषा पाठ्यक्रम के उद्देश्य

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—बुनियादी स्तर (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022 में भाषा शिक्षा के उद्देश्य को बच्चों के समग्र विकास में एक महत्वपूर्ण तत्व माना गया है। इस नीति के अनुसार भाषा पाठ्यक्रम का लक्ष्य न केवल भाषायी कौशल विकसित करना है, बल्कि बच्चों की सोचने की क्षमता, सामाजिक संवाद और आत्मव्यक्तित्व को भी बढ़ावा देना है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—बुनियादी स्तर 2022 में निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्यों पर ध्यान दिया गया है—

कौशल का विकास— बच्चों को बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने की क्षमताएँ सिखाने के लिए पाठ्यक्रम तैयार किया गया है, ताकि वे प्रभावी ढंग से संवाद कर सकें।

भाषायी विविधता का सम्मान— यह सुनिश्चित करना कि बच्चे विभिन्न भाषाओं और बोलियों का सम्मान करें और उनके महत्व को समझें।

साहित्यिक साक्षरता— बच्चों में साहित्यिक अभिरुचि विकसित करना, ताकि वे कहानियों, कविताओं और निबंधों के माध्यम से भाषा के विभिन्न पहलुओं को समझ सकें।

सामाजिक भावनात्मक विकास— भाषा शिक्षा के माध्यम से बच्चों के सामाजिक कौशल, आत्मविश्वास और भावनात्मक समझ को बढ़ावा देता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के माध्यम के चयन में बहुभाषिकता को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया है। नीति यह सुनिश्चित करती है कि विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा (L1) में शिक्षा प्राप्त हो, जिससे वे बेहतर तरीके से समझ और सीख सकें। मातृभाषा में शिक्षा न केवल विद्यार्थियों की भाषा कौशल को विकसित करती है, बल्कि उनकी सांस्कृतिक पहचान को भी मजबूत करती है। L1 का उपयोग विद्यार्थियों को भाषा के मूलभूत तत्वों को समझने में मदद करता है, जिससे वे अन्य भाषाओं को सीखने में भी सक्षम होते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में ध्वनियों और आकृतियों के बीच संबंध को समझने पर जोर दिया गया है। क्योंकि भाषा की मूलभूत संरचना को समझने के लिए ध्वनियों और आकृतियों का ज्ञान आवश्यक है। जब विद्यार्थी ध्वनियों और आकृतियों के बीच संबंध को समझते हैं तो वे पढ़ने और लिखने में अधिक सक्षम होते हैं। यह प्रक्रिया भाषा अधिग्रहण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह भी उल्लेख किया गया है कि विभिन्न भाषाओं के बीच इन अवधारणाओं का एकीकरण कैसे किया जा सकता है। यह एकीकरण न केवल विद्यार्थियों को विभिन्न भाषाओं के प्रति संवेदनशील बनाता है, बल्कि उन्हें एक समग्र दृष्टिकोण से भाषा सीखने में भी मदद करता है।

प्रारंभिक वर्षों में आरंभिक भाषा और साक्षरता के विकास के लिए कौशलों, ज्ञान और अभिवृत्तियों की एक विस्तृत शृंखला विकसित करने की आवश्यकता होती है। कुशलतापूर्वक पढ़ने और लिखने के लिए बच्चे को बोले गए शब्दों में विभिन्न ध्वनियों को अलग करने, अक्षर-ध्वनि संबंधों को पहचानने, ध्वनियों को मिलाकर शब्द बनाने, शब्दावली विकसित करने, जो लिखा गया है उसे समझने और

पढ़ने का प्रवाह विकसित करने की आवश्यकता होती है। इसके लिए साक्षरता के शिक्षण की भी आवश्यकता होती है, जिसमें कई प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं जो समझ, शब्दावली, प्रवाह, शब्द पहचान, अक्षर ज्ञान और ध्वनि जागरूकता का निर्माण करती हैं। जैसे कि चित्रात्मक पहचान, स्क्रिब्लिंग, मौखिक भाषा का विकास, ध्वन्यात्मक जागरूकता, डिकोडिंग, समझ के साथ पढ़ना, धाराप्रवाह पढ़ना, और लेखन।

यह संतुलित साक्षरता दृष्टिकोण पर जोर देता है, जिसमें शब्द की पहचान और शब्दों को लिखने में सटीकता (निम्नक्रम कौशल) और भाषा समझ एवं अभिव्यक्ति (उच्चस्तरीय कौशल) शामिल हैं। इसके अलावा यह पठन की विभिन्न शिक्षण विधियों, जैसे— पढ़कर सुनाना, मार्गदर्शित पठन और स्वतंत्र पठन को भी शामिल करता है।

बुनियादी स्तर (फाउंडेशनल स्टेज) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2022) में भाषा के संदर्भ में निम्नलिखित पाठ्यचर्या लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं—

- CG-9 बच्चे दैनिक जीवन के लिए प्रभावी संप्रेषण की कुशलता विकसित करते हैं।
- CG-10 बच्चे पहली भाषा (L1) में पढ़ने और लिखने में निपुणता विकसित करते हैं।

इस रूपरेखा के अनुसार भाषा सीखने-सिखाने के लिए भाषा-शिक्षण के चारों स्तंभों पर कार्य करना महत्वपूर्ण है। ये चार स्तंभ हैं— मौखिक भाषा का विकास, शब्द पहचान, पढ़ना और लिखना।

1. **मौखिक भाषा का विकास**— यह स्तंभ बच्चों को बेहतर ढंग से सुनकर समझने, मौखिक शब्दावली का विकास करने और साथियों व अन्य जानकार लोगों (जैसे— बड़े विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक) के साथ बातचीत और चर्चा का उपयोग सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसका उद्देश्य बच्चों की सुनने और बोलने की क्षमताओं को बढ़ाना है, जिससे वे संवाद करने में सक्षम बनें।
2. **शब्द पहचान**— इस स्तंभ में प्रिंट जागरूकता और ध्वनि जागरूकता शामिल है। इसमें प्रतीकों और ध्वनियों के संबंध को समझना, लिखित शब्दों को पहचानना और उन्हें लिखने की क्षमता को विकसित करना शामिल है। बच्चों को यह सिखाया जाता है कि कैसे वे शब्दों को पहचानें और उनके अर्थ को समझें।
3. **पढ़ना**— पढ़ाई के इस स्तंभ में लिखित सामग्री से अर्थ का निर्माण करना और इसके विषय में आलोचनात्मक या समीक्षात्मक ढंग से चिंतन करना शामिल है। अर्थात बच्चे केवल पढ़ें नहीं, बल्कि पढ़ी गई सामग्री का विश्लेषण भी करें और इसके विषय में विचार-विमर्श करें।
4. **लिखना**— इस स्तंभ में तार्किक और व्यवस्थित तरीके से विचारों या सूचनाओं की प्रस्तुति के साथ-साथ शब्दों को सही ढंग से लिखने की क्षमता को विकसित करना शामिल है। बच्चों को सही व्याकरण और वर्तनी के साथ लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे वे अपने विचारों को और सुसंगत तरीके से प्रस्तुत कर सकें।

हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'सारंगी' (कक्षा 1 और 2) का विस्तृत परिचय

'सारंगी' कक्षा 1 और 2 की हिंदी की पाठ्यपुस्तकें बच्चों को हिंदी भाषा का आनंदमय और प्रभावी तरीके से शिक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से बनाई गई हैं। ये किताबें बच्चों को भाषा सिखाने के साथ-साथ उनके सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों, रचनात्मकता, नैतिकता व पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता तथा संज्ञानात्मक विकास में भी सहायक सिद्ध होती हैं, जिससे उनका व्यक्तित्व और ज्ञान समृद्ध होता है।

कक्षा 1 की हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक 'सारंगी' का परिचय और मुख्य विशेषताएँ

पाठों का चयन और उद्देश्य—

- प्रत्येक पाठ बच्चों के जीवन से जुड़ी घटनाओं को ध्यान में रखकर चयनित किया गया है, ताकि भाषा सीखने की प्रक्रिया सरल एवं सार्थक हो सके।
- इस पुस्तक में पारिवारिक और सामाजिक परिवेश से जुड़ी सामग्री का समावेश है, बच्चों को उनके आसपास की दुनिया को समझने में मदद मिले।

भाषा सीखने के चार स्तंभ

1. **मौखिक भाषा विकास**— मौखिक भाषा विकास के लिए बच्चों को कहानी सुनाने, कविता गाने और शब्दों के उच्चारण का अभ्यास करने के लिए प्रेरित किया गया है। उदाहरण के लिए, 'परिवार' नामक इकाई में बच्चे अपने परिवार के सदस्यों के नाम लेते हैं, जिससे संवाद में आत्मविश्वास आता है। 'मछली' चित्र और बातचीत भाग में बच्चों को चित्र में दी गई चीज़ों की पहचान करने और उसके बारे में बातचीत करने के पर्याप्त अवसर देता है।

2. **शब्द पहचान**— बच्चों को प्रिंट जागरूकता, ध्वनि अक्षर जागरूकता और शब्दों की पहचान सिखाई जाती है, ताकि वे खुद से शब्द बनाने का अभ्यास कर सकें। उदाहरण के लिए 'वाह, मेरा घोड़ा!' में 'शब्दों का खेल' गतिविधि के अंतर्गत 'त, घ, ड़' ध्वनि वाले शब्दों को पहचानना और लिखना। 'तीन साथी' पाठ में दिए गए शब्दों में 'इ' और 'ई' की ध्वनि की आकृति तथा मात्रा की पहचान करना, दिए गए शब्दों में मात्रा लगाकर पढ़ना, लिखना और नए शब्द बनाना आदि। 'फूली रोटी' कहानी में विद्यार्थियों को एक-सी ध्वनियों से आरंभ और अंत होने वाले विद्यार्थियों की खोज एवं समान रूप से शब्द बनाने के अवसर दिए गए हैं।

2. 'त', 'घ' 'ड़' की ध्वनि वाले शब्दों को पहचानिए और लिखिए –

3. **पढ़ना**— लिखित सामग्री से अर्थ समझने और उसके बारे में सोचने की क्षमता को विकसित करने के लिए बच्चों को प्रेरित किया गया है। पढ़ने की आदत को विकसित करने के लिए छोटे-छोटे पाठ और चित्रित कहानियाँ दी गई हैं। उदाहरण के लिए, 'मिठाई' कहानी को मिलकर पढ़ने की बात की गई है। कहानी के माध्यम से बच्चे अध्यापक के साथ बाद में पहले अपने मित्रों के साथ मिलकर पढ़ने के लिए प्रेरित होते हैं। (भालू ने कहा, "शहद खा लो।" गधे ने मना कर दिया। खरगोश ने कहा, "गाजर खा लो।" गधे ने मना कर दिया।)

भालू ने कहा, "शहद खा लो।"
गधे ने मना कर दिया।

खरगोश ने कहा, "गाजर खा लो।"
गधे ने मना कर दिया।

चींटे ने कहा, "गुड़ खा लो।"
गधे ने मना कर दिया।

4. **लिखना**— विचारों और भावनाओं को सही और व्यवस्थित तरीके से व्यक्त करने के साथ-साथ शब्दों को सही ढंग से लिखने के लिए अभ्यास करवाए जाते हैं। उदाहरण के लिए, आनंदमयी कविता 'हवा' में चित्र बनाना और कुछ नाम लिखना।

चित्रकारी

मान लीजिए कि मुन्नी ने हवा से भरे फुग्गे आपको दे दिए। आप उन फुग्गों से क्या करेंगे? सोचिए, चित्र बनाइए और कुछ शब्द भी लिखिए –

कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं, आप उनमें से भी शब्द चुन सकते हैं।

हवा फुग्गा गुब्बारा खेल मुन्नी

सांस्कृतिक संदर्भों का समावेश

परिवार, प्रकृति, खान-पान, त्योहार और मेले जैसी इकाइयों में बच्चों के जीवन से जुड़ी कहानियाँ और कविताएँ दी गई हैं, जैसे 'होली' त्योहार कविता में बच्चों को रंगों और खुशी का अनुभव कराया गया है। हर इकाई बच्चों को उनकी संस्कृति से जोड़ती है और सामाजिक मूल्यों की समझ को बढ़ावा देती है।

खेल-आधारित गतिविधि

बच्चों को खेल-खेल में भाषा सिखाने के लिए 'शब्दों का खेल', 'खेल-खेल' में गतिविधियाँ दी गई हैं,

जिससे विद्यार्थी ध्वनि और अक्षरों की पहचान करते हुए सार्थक शब्द बनाना और आगे चलकर शब्दों के सही क्रम में लिखकर वाक्य बनाना आदि सीखते हैं। रंगीन चित्रों के माध्यम से बच्चों को रचनात्मकता से भाषा सिखाने का प्रयास किया गया है, जिससे वे चित्र देखकर अपने विचार व्यक्त कर कुछ वाक्य लिखने का प्रयास कर सकते हैं।

पर्यावरण के प्रति जागरूकता

प्रकृति के प्रति प्रेम और संरक्षण का महत्व बच्चों को 'हरी भरी दुनिया' शीर्षक के माध्यम से दिया गया है। इसमें पेड़-पौधों और पर्यावरण से जुड़े शब्दों और चित्रों के माध्यम से बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता विकसित की गई है

बच्चों की रचनात्मकता का विकास

कहानी सुनाओ, कविता गाओ और चित्र बनाओ जैसी गतिविधियाँ बच्चों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करती हैं। उदाहरण के लिए, अँगूठे की छाप से मनपसंद चित्र बनाकर उसके बारे में बता सकते हैं।

प्रश्न-उत्तर आधारित सोच

पाठों के अंत में खोजें-जानें गतिविधि के अंतर्गत पूछे गए प्रश्न, जैसे— 'परिवार के लोगों से बातचीत करके जानें कि आपके घर पर कौन-से त्योहार अधिक मनाए जाते हैं और क्यों?' बच्चों को अपने समुदाय, परिवार और अपनी पसंद के बारे में बताने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। 'अपने घर व आस-पास अपने परिवार के लोगों के साथ घूमिए। छोटे-छोटे कीड़ों–मकोड़ों, जानवरों को देखिए, वे क्या करते हैं, क्या खाते हैं, कितने अलग-अलग रंग के हैं' इससे बच्चों में इन कीड़ों-मकोड़ों तथा जानवरों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यह पद्धति उनकी सोचने की क्षमता को भी विकसित करती है।

कक्षा 2 की हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक 'सारंगी' का परिचय और मुख्य विशेषताएँ

भाषा और साक्षरता कौशल का विस्तार

मौखिक भाषा विकास के लिए बच्चों से कहानियाँ सुनाने और बातचीत में भाग लेने को कहा गया है, जैसे 'तोसिया का सपना' कहानी के माध्यम से बच्चे अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं। शब्द पहचान के अंतर्गत बच्चों को वर्ण और ध्वनियों की पहचान करवाई गई है, जैसे— 'शब्दों का खेल' गतिविधि। पढ़ने का कौशल बढ़ाने के लिए बच्चों के लिए रोमांचक कहानियाँ और आनंदमयी कविताएँ, जैसे— 'घर' शामिल की गई है। लिखना कौशल के अतंर्गत बच्चों को चित्र बनाकर उस पर लिखना और अपने अनुभवों को साझा करना सिखाया गया है।

संदर्भ-आधारित सामग्री

पाँच प्रमुख संदर्भ—परिवार, रंग ही रंग, मित्रता, हरी–भरी धरती और आकाश सम्मिलित किए गए हैं। प्रत्येक इकाई को बच्चों के जीवन से जोड़ने के लिए विभिन्न गतिविधियाँ दी गई हैं, जैसे परिवार इकाई में बच्चों को उनके परिवार के सदस्यों का परिचय देना सिखाया जाता है।

भाषा खेल और गतिविधि-आधारित अध्यापन

खेल-आधारित शिक्षा में बच्चे शब्दों का खेल और कविता रचना जैसी गतिविधियों का हिस्सा बनते हैं। इससे उनकी भाषा समझ मजबूत होती है। 'आइए, कुछ बनाएँ' जैसी गतिविधि से बच्चे रचनात्मकता के माध्यम से अपनी बात कहने का मौका पाते हैं। उदाहरण के लिए, 'किसान' पाठ में बिंदुओं की सहायता से 'बाघ बचाओ' पोस्टर को पूरा करना और एक संदेश लिखना।

सांस्कृतिक मूल्य और संवेदनशीलता

इस पुस्तक में भारतीय संस्कृति, नैतिकता, करुणा और खेल स्पर्धा जैसे मूल्यों को 'मित्रता' इकाई के माध्यम से सिखाया गया है। यह बच्चों में सहानुभूति, दया और स्पर्धा की भावना उत्पन्न करती है।

प्रश्न और गतिविधियाँ

पाठों के अंत में बच्चों से उनके विचार जानने के लिए प्रश्न पूछे गए हैं, जैसे 'आपको घर में सबसे अच्छा क्या लगता है और क्यों?' इस प्रकार के प्रश्न बच्चों को सोचने और बोलने का अवसर देते हैं।

रचनात्मकता का विकास

बच्चों को अपनी सोच और कल्पना शक्ति को उभारने के लिए 'चित्र बनाओ और कहानी सुनाओ' जैसी गतिविधियाँ दी गई हैं। उदाहरण— 'चंदा मामा'

पाठ में बच्चे चाँद मामा की कहानी के बारे में चित्र बनाते हैं और कहानी भी कहते हैं। आनंदमयी कविता 'बादल' में 'चित्रकारी और लेखन' गतिविधि के अंतर्गत दिए गए चित्र में रंग भरना और चित्र के आधार पर 5–6 वाक्य लिखना आदि उदाहरण रचनात्मकता का संवर्द्धन करते हैं।

चित्रकारी और लेखन

नीचे दिए गए चित्र में रंग भरिए। चित्र के आधार पर पाँच से छह वाक्य लिखिए–

....

....

....

....

....

पर्यावरण के प्रति जागरूकता

'हरी–भरी धरती' जैसी इकाइयाँ बच्चों में पर्यावरण और प्रकृति के प्रति प्रेम और संरक्षण का भाव उत्पन्न करती हैं। पेड़, पौधों, पक्षियों से जुड़ी कविताओं और चित्र के माध्यम से बच्चों को प्रकृति के महत्व का एहसास कराया गया है। उदाहरण के लिए, आइए, कुछ बनाएँ गतिविधि के अंतर्गत 'बाघ बचाओ' पोस्टर के बिंदुओं को मिलकर पूरा करना और उस संदर्भ पर एक संदेश लिखना।

कक्षा 3 की हिंदी पाठ्यपुस्तक 'वीणा' का विस्तृत परिचय

कक्षा 3 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'वीणा' को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023 के आधार पर तैयार किया गया है। यह पाठ्यपुस्तक बच्चों के परिवार, परिवेश, संस्कृति और राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति जुड़ाव पर जोर देती है। पुस्तक में पाँच इकाइयाँ हैं जो कविता, कहानी, पत्र, निबंध, संवाद के द्वारा बच्चों की भाषा और सोचने की क्षमता को विकसित करती हैं। सरल भाषा में भारतीय संस्कृति, परंपराएँ, विविधता में एकता और आधुनिक तकनीकी पेश की गई है। यह बहुसांस्कृतिक समझ और भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूकता बढ़ाती है।

पहली इकाई का शीर्षक 'हमारा पर्यावरण' है इसमें सुंदर प्रकृति का चित्रण है और बच्चा अपने आस-पास के वातावरण के प्रति सम्मानजनक नागरिक बन जाता है। '*सीखो*' जैसी कविता विनम्रता और दयालुता का एक महत्वपूर्ण पाठ सिखाती है तो दूसरी तरफ, '*कितने पैर?*' जैसे पाठ जीव-जगत की दुनिया के प्रति रुचि उत्पन्न करते हैं। भाषा सरल है, इन महत्वपूर्ण विचारों को बच्चों के लिए आसान शब्दों में साझा किया गया है। दूसरी इकाई हमारे मित्र में मनोरंजक कहानियाँ हैं, जैसे— बीरबल की खिचड़ी, चतुर गीदड़ आदि। ये कहानियाँ व्यक्ति और परिवेश से मित्रता के अनुरूप स्थानीय संदर्भ में सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण को विकसित करने का प्रयास किया है। इसलिए प्रत्येक कहानी के बाद प्रत्येक गतिविधियों में विद्यार्थियों ने जो सीखा है उसके

बारे में सोचने पर मजबूर करती है। इससे उनकी भाषा कौशल में सुधार होता है और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा मिलता है।

तीसरी इकाई 'आओ खेलें' है जो बच्चों के खेलने के लगाव से जुड़ती हैं और आनंद की वृद्धि के लिए आनंदमयी कविताएँ सम्मिलित की गई हैं। एक समूह के रूप में खेलना और निष्पक्ष खेलना क्यों महत्वपूर्ण है, 'रस्साकशी' जैसे खेलों में दर्शाया गया है जहाँ पाठ न केवल इस बारे में है कि कौन-सा खेल खेला गया था, बल्कि एक समूह के रूप में काम करना और उसमें प्रयास करना भी शामिल है। अंतिम दो इकाइयों में अपना-अपना काम और 'हमारा देश' श्रम का महत्व, आत्मनिर्भरता, राष्ट्रीय गौरव, खान-पान संस्कृति, विविधता में एकता आदि तत्वों के आधार पर प्रेरक कहानियाँ, निबंध, संवाद पाठ लिए गए हैं। देशभक्ति कविता 'भारत' और संवाद पाठ 'चंद्रयान' से उन्हें जो कार्य सौंपा जाएगा उससे उनके मन को अपने राष्ट्र की उपलब्धि से जुड़ने में मदद मिलेगी, क्योंकि इससे उन्हें अपनेपन का गर्व महसूस होगा।

पाठ्यपुस्तक का परिचय और मुख्य विशेषताएँ

भाषायी कौशल का बहुआयामी विकास

'सुनना और बोलना' प्रत्येक पाठ में बातचीत, कहानी सुनना और उस पर प्रतिक्रिया देने जैसे मौखिक अभ्यास शामिल हैं, जैसे— 'चींटी से भेंट' में, जहाँ बच्चे चींटी के साथ काल्पनिक बातचीत करते हैं। यह सुनने और बोलने के कौशल को निखारने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करता है।

पढ़ना और लिखना

'बच्चों को पढ़ने में रुचि पैदा करने के लिए', पाठों में सरल और तुकबंदी वाली कविताएँ, जैसे—'चींटी' कविता दी गई हैं। इसमें बच्चों को कविता की अधूरी पंक्तियों को भरने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जैसे— 'घर को खूब सजाती चींटी,' जो उनकी पढ़ने और शब्द पहचानने की क्षमता को बढ़ाती हैं।

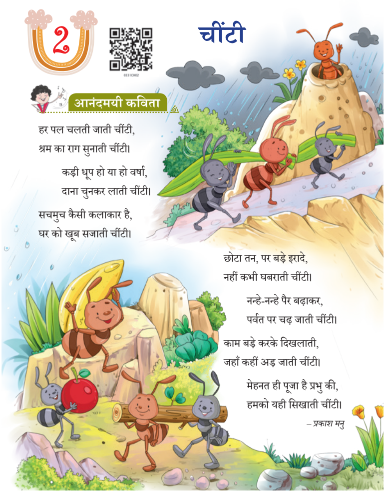

2

चींटी

आनंदमयी कविता

हर पल चलती जाती चींटी,
श्रम का राग सुनाती चींटी।

कड़ी धूप हो या हो वर्षा,
दाना चुनकर लाती चींटी।

सचमुच कैसी कलाकार है,
घर को खूब सजाती चींटी।

छोटा तन, पर बड़े इरादे,
नहीं कभी घबराती चींटी।

नन्हे-नन्हे पैर बढ़ाकर,
पर्वत पर चढ़ जाती चींटी।

काम बड़े करके दिखलाती,
जहाँ कहीं अड़ जाती चींटी।

मेहनत ही पूजा है प्रभु की,
हमको यही सिखाती चींटी।

– प्रकाश मनु

बातचीत के लिए

1. आपने अपने आस-पास, घर और विद्यालय में कौन-कौन से जीव-जंतु देखे हैं?
2. आपने सबसे छोटा कौन-सा कीट देखा और कहाँ देखा है?
3. आपने चींटी के अतिरिक्त और कौन-कौन से श्रम करने वाले जीव देखे हैं?
4. नन्ही चींटी के बारे में अपना कोई अनुभव बताइए।

कविता से आगे

1. नीचे कुछ वस्तुओं के चित्र बने हैं। बताइए, चींटियाँ किसे खाना चाहेंगी? उस पर ☺ का चिह्न बनाइए—

लड्डू | करेला | गेहूँ के दाने
चीनी | शहद | सूखी पत्तियाँ

2. निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा कीजिए—

(क) घर को ....
(ख) पर्वत पर ....
(ग) दाना चुनकर ....
(घ) श्रम का राग ....

सामाजिक और नैतिक मूल्यों का समावेश

'बीरबल की खिचड़ी' और 'किसान की होशियारी' जैसे पाठों के माध्यम से बच्चों में नैतिकता, बुद्धिमानी और सहानुभूति जैसे गुणों का विकास किया जाता है। ये कहानियाँ उनके सामाजिक व्यवहार में सुधार लाने के साथ-साथ महत्वपूर्ण जीवन सीख प्रदान करती हैं। इन कहानियों के माध्यम से बच्चे विचारशीलता और संयम जैसे गुणों को सीखते हैं।

14

किसान की होशियारी

सुनें कहानी

एक किसान अपना खेत जोत रहा था। अचानक कहीं से एक भालू आ गया। भालू किसान को मारने झपटा। किसान ने कहा, "मुझे क्यों मारते हो? उपज होने दो, जो कहोगे, वही खिलाऊँगा।"

भालू ने कहा, "भूमि के ऊपर की उपज मेरी और नीचे की तुम्हारी रहेगी।"

रचनात्मकता और कल्पनाशीलता को प्रोत्साहन

पाठ्यपुस्तक में दिए गए अभ्यास बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन किए गए हैं। 'चतुर गीदड़' कहानी में बच्चों को गीदड़ का मुखौटा बनाने जैसी गतिविधि दी गई है। इसी तरह, 'रस्साकशी' पाठ में बच्चों से उनके पसंदीदा खेल के बारे में लिखवाया गया है, जो उन्हें सोचने और विचार व्यक्त करने में मदद करता है। 'किसान की होशियारी' कहानी में 'कुछ नया करें' गतिविधि के अंतर्गत बच्चों को— 'कल्पना कीजिए कि भालू आपके विद्यालय में आया है। आप उससे क्या सवांद करेंगे?'

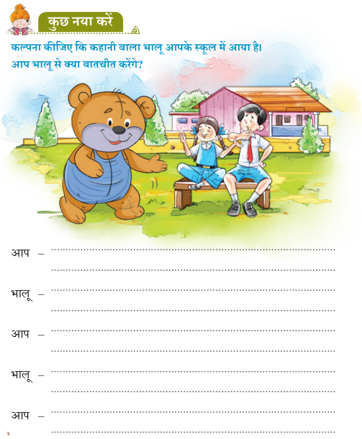
कुछ नया करें

कल्पना कीजिए कि कहानी वाला भालू आपके स्कूल में आया है। आप भालू से क्या बातचीत करेंगे?

आप – ....

भालू – ....

आप – ....

भालू – ....

आप – ....

प्रकृति और पर्यावरण के प्रति जागरूकता

'हमारा पर्यावरण' जैसे पाठों में प्रकृति के प्रति प्रेम और समझ बढ़ाने पर जोर दिया गया है। 'आम का पेड़', 'पेड़ों की अम्मा तिमक्का' जैसे पाठों में बच्चों को पेड़-पौधों के बारे में जानने और उनके महत्व को समझने के लिए प्रेरित किया गया है। बच्चों को प्रकृति के विभिन्न तत्वों का अवलोकन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे वे पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनते हैं।

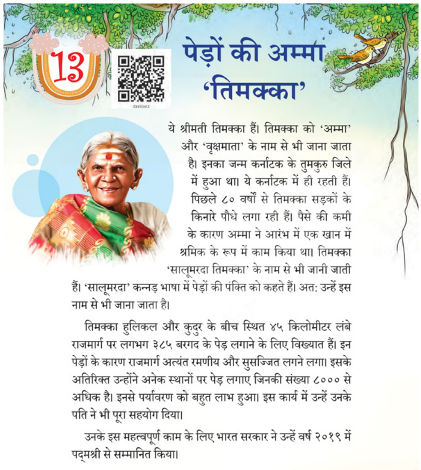
13

पेड़ों की अम्मा 'तिमक्का'

ये श्रीमती तिमक्का हैं। तिमक्का को 'अम्मा' और 'वृक्षमाता' के नाम से भी जाना जाता है। इनका जन्म कर्नाटक के तुमकुरु जिले में हुआ था। ये कर्नाटक में ही रहती हैं। पिछले ८० वर्षों से तिमक्का सड़कों के किनारे पौधे लगा रही हैं। पैसे की कमी के कारण अम्मा ने आरंभ में एक खान में श्रमिक के रूप में काम किया था। तिमक्का 'सालूमरदा तिमक्का' के नाम से भी जानी जाती हैं। 'सालूमरदा' कन्नड़ भाषा में पेड़ों की पंक्ति को कहते हैं। अत: उन्हें इस नाम से भी जाना जाता है।

तिमक्का हुलिकल और कुदुर के बीच स्थित ४५ किलोमीटर लंबे राजमार्ग पर लगभग ३८५ बरगद के पेड़ लगाने के लिए विख्यात हैं। इन पेड़ों के कारण राजमार्ग अत्यंत रमणीय और सुसज्जित लगने लगा। इसके अतिरिक्त उन्होंने अनेक स्थानों पर पेड़ लगाए जिनकी संख्या ८००० से अधिक है। इनसे पर्यावरण को बहुत लाभ हुआ। इस कार्य में उन्हें उनके पति ने भी पूरा सहयोग दिया।

उनके इस महत्वपूर्ण काम के लिए भारत सरकार ने उन्हें वर्ष २०१९ में पद्मश्री से सम्मानित किया।

बौद्धिक और तार्किक कौशल का विकास

पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक पाठ में प्रश्नोत्तर, पहेलियाँ और चिंतनशील प्रश्नों के माध्यम से बच्चों के बौद्धिक कौशल को बढ़ावा दिया गया है। उदाहरण के लिए, 'चन्द्रयान' पाठ में, बच्चों से पूछा जाता है कि यदि वैज्ञानिक विद्यालय में आएँ, तो वे उनसे कौन-कौन से प्रश्न पूछना चाहेंगे। इस प्रकार के प्रश्न उनकी तर्कशक्ति और सोचने की क्षमता को बढ़ाते हैं।

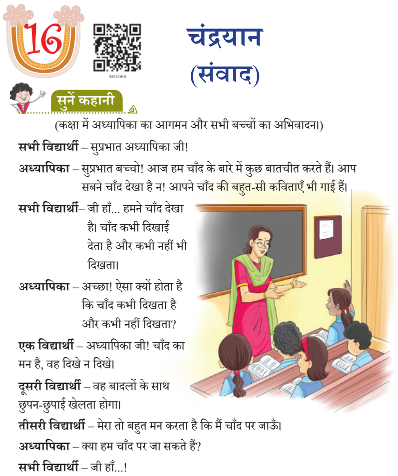

16

चंद्रयान

(संवाद)

सुनें कहानी

(कक्षा में अध्यापिका का आगमन और सभी बच्चों का अभिवादन।)

सभी विद्यार्थी – सुप्रभात अध्यापिका जी!

अध्यापिका – सुप्रभात बच्चो! आज हम चाँद के बारे में कुछ बातचीत करते हैं। आप सबने चाँद देखा है न! आपने चाँद की बहुत-सी कविताएँ भी गाई हैं।

सभी विद्यार्थी– जी हाँ... हमने चाँद देखा है। चाँद कभी दिखाई देता है और कभी नहीं भी दिखता।

अध्यापिका – अच्छा! ऐसा क्यों होता है कि चाँद कभी दिखता है और कभी नहीं दिखता?

एक विद्यार्थी – अध्यापिका जी! चाँद का मन है, वह दिखे न दिखे।

दूसरी विद्यार्थी – वह बादलों के साथ छुपन-छुपाई खेलता होगा।

तीसरी विद्यार्थी – मेरा तो बहुत मन करता है कि मैं चाँद पर जाऊँ।

अध्यापिका – क्या हम चाँद पर जा सकते हैं?

सभी विद्यार्थी – जी हाँ...!

सांस्कृतिक विविधता और एकता का संदेश

'हमारा देश' जैसी इकाइयों में भारत की विविधता को दर्शाने वाले पाठ दिए गए हैं। 'हम अनेक किंतु एक' पाठ में भारत की संस्कृति, परंपरा और विविधता का परिचय देते हुए एकता के महत्व पर जोर दिया गया है। यह बच्चों को उनके देश के प्रति गर्व और सांस्कृतिक विविधता के प्रति सम्मान को बढ़ाता है।

समूह में सीखने की गतिविधियाँ

पाठ्यपुस्तक में बच्चों को समूह में सीखने के लिए प्रेरित करने वाली गतिविधियाँ भी शामिल हैं, जैसे—'तुम्हारा प्रिय खेल कौन सा है?' या 'आप अपना जादुई पिटारा बनाइए और बताइए की आप उसमें क्या-क्या रखना चाहेंगे' प्रश्न में बच्चे एक-दूसरे से चर्चा करते हैं, जिससे उनमें आपसी संवाद और सहयोग की भावना विकसित होती है।

अध्यापिका – कैसे?

सभी विद्यार्थी – रॉकेट से...

अध्यापिका – ठीक है! अब यह बताओ कि क्या कोई रॉकेट अभी तक चाँद पर गया है?

सभी विद्यार्थी – हाँ... हाँ! गया है। एक नहीं... कई गए हैं।

अध्यापिका – अच्छा! कौन-सा रॉकेट?

सभी विद्यार्थी – चंद्रयान 1, 2, 3!

अध्यापिका – शाबाश! आपको चंद्रयानों के बारे में तो पता है। हमारे वैज्ञानिकों ने चंद्रयान-3 को चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर उतारा है। ऐसा करने वाला भारत पहला देश है। है न हम सबके लिए गौरव की बात!

एक विद्यार्थी – यह दक्षिणी ध्रुव क्या है?

अध्यापिका – जैसे दक्षिण दिशा में धरती का दक्षिणी ध्रुव है, वैसे ही चंद्रमा का भी दक्षिणी ध्रुव है। कठिन परिस्थिति के कारण वहाँ कोई भी यान उतारना मुश्किल है। पर हमारे वैज्ञानिकों ने यह गौरवपूर्ण कार्य कर लिया है। आज की हमारी बातचीत इसी चंद्रयान के बारे में है। हमारे देश के वैज्ञानिक चाँद पर रॉकेट भेजकर यह पता लगाने का प्रयत्न कर रहे हैं कि चाँद पर क्या-क्या है?

कुछ विद्यार्थी – हमारा भी मन करता है कि हम भी चाँद पर जाकर वहाँ के बारे में जानें।

अध्यापिका – हाँ... हाँ, क्यों नहीं! अच्छा यह बताएँ कि वैज्ञानिकों को चाँद पर क्या-क्या मिला होगा?

18

हम अनेक किंतु एक

आनंदमयी कविता

हैं कई प्रदेश के,
किंतु एक देश के,
विविध रूप-रंग हैं,
भारत के अंग हैं।
भारतीय वेश एक
हम अनेक किंतु एक।

बोलियाँ हजार हैं,
टोलियाँ हजार हैं,
कंठ भी अनेक हैं,
राग भी अनेक हैं,
किंतु गीत-बोल एक
हम अनेक किंतु एक।

एक मातृभूमि है,
एक पितृभूमि है,
एक भारतीय हम
चल रहे मिला कदम,
लक्ष्य के समक्ष एक
हम अनेक किंतु एक।

–द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

निष्कर्ष

हिंदी पाठ्यपुस्तकें 'सारंगी' और 'वीणा' प्रारंभिक शिक्षा के लिए एक व्यापक और प्रभावी संसाधन हैं। ये न केवल भाषायी कौशल विकसित करती हैं, बल्कि बच्चों में मानवीय मूल्यों, सांस्कृतिक समझ और रचनात्मक सोच को भी प्रोत्साहित करती हैं। पाठ्यपुस्तकें बच्चों को उनके सामाजिक परिवेश से जोड़ने, नैतिकता और सामुदायिक सहयोग जैसे मूल्यों को आत्मसात करने में मदद करती हैं। खेल-आधारित शिक्षण और पर्यावरण से जुड़ी गतिविधियाँ बच्चों में सीखने की रुचि बढ़ाती हैं।

इसके अतिरिक्त शिक्षक सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए प्रिंट और डिजिटल शिक्षण सामग्री का उपयोग कर सकते हैं, जैसे— रा.शै.अ.प्र.प. की बरखा शृंखला, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया और राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय की सामग्री का उपयोग विद्यार्थियों को भाषा पर पकड़ मजबूत करने में मदद कर सकता है। इन सामग्रियों के उपयोग से विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत विकसित होती है, जिससे वे पहले 'पढ़ना सीखते हैं' और फिर 'सीखने के लिए पढ़ते हैं।' यह न केवल भाषा दक्षता को बढ़ावा देता है, बल्कि अन्य विषयों में उनकी सीखने की क्षमता को भी सशक्त बनाता है। इन पाठ्यपुस्तकों और संसाधनों का संतुलित उपयोग बच्चों के समग्र विकास को सुनिश्चित करता है, जिससे वे आत्मनिर्भर और संवेदनशील नागरिक बन सकें। अत: इन पाठ्यपुस्तकों का कुशल उपयोग प्रारंभिक शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने और एक सशक्त समाज के निर्माण में योगदान दे सकता है।

सदंर्भ

जेनेट, गोंजालेज-मेना. 2014. *फाउंडेशंस ऑफ अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन : टीचिंग चिल्ड्रन इन ए डाइवर्स सोसाइटी.* अध्याय 8–12.

यादव, पद्‌मा. 2018. पूर्व-प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा का शिक्षण. *प्राथमिक शिक्षक*. वर्ष 42, अंक 4, पृ.सं. 59–60. राष्ट्रीय शैक्षिक अनसुंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2019. *अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन (ई.सी.ई.) प्रोग्राम*. पृ.सं. 22–30. राष्ट्रीय शैक्षिक अनसुंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022.* पृ.सं. 120–121. राष्ट्रीय शैक्षिक अनसुंधान और प्रशिक्षण परिषद, *नई दिल्ली.*

———. 2023. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023.* पृ.सं. 133–169. राष्ट्रीय शैक्षिक अनसुंधान और प्रशिक्षण परिषद, *नई दिल्ली.*

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.